राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत

"सोने री धरती अठे, चाँदी रो असमान |

रंग रंगीलो, रस भरयो, म्हाँरो प्यारो राजस्थान ||"

इस उक्त कथन से आशय है कि राजस्थान की भूमि संतों, शूरवीरों,दानवीरों तथा अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं मेलजोल की भावना के लिए जग प्रसिद्ध है | यहाँ के लोग मेहनती उत्साही एवं कर्मठ होते हैं | प्राचीन काल से ही यहाँ के शासको ने राज्य की विशिष्ट संस्कृति को बढ़ावा एवं संरक्षण दिया है | यहाँ के कवियों, लोकगायको एवं लोक कलाकारों ने अपने काव्य के विभिन्न रंगों से इसके इन्द्रधनुषी परंपराओं को संजोया है तथा इसने आमजन के मानस पटल पर अमित छाप छोड़ी है | वर्तमान में यहाँ के लंगा, मांगणियार, कालबेलिया, नट, भांड एवं भवाई लोक कलाकार संपूर्ण भारत के अलावा सात समंदर पार भी राजस्थानी संस्कृति के विविध रंग बिखेर रहे हैं| विदेशों में भी लोग राजस्थानी लोकगीतों की धुनो पर थिरकते हैं| यहाँ पर शास्त्रीय संगीत जन -जन के मन के तारों को झंकृत कर देता है | रेबारी, गाड़ियाँ लोहार, बंजारे, कालबेलिया आदि जातियाँ आज भी अपनी परंपरागत वेशभूषा से बेहद लगाव रखती हैं| राजस्थान के सांस्कृतिक आँचल में सभी धर्मों के लोग अपनी विशिष्ट संस्कृति संजोये हुए हैं| ख्वाजा की दरगाह में सभी धर्मों के लोगो द्वारा जियारत करना, बाबा रामदेव के मेले में हिंदू -मुस्लिम की उपस्थिति, केसरिया नाथ के चरणों में केसर पीते हुए जैन एवं आदिवासी तथा पुष्कर के पवित्र सरोवर में डुबकी लगाते हुए हिंदू - जैन सिख -आदिवासी राजस्थान की संस्कृति में सांप्रदायिक सद्भाव एवं मेलजोल की परंपरा दिखाई देती है |

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत में राजस्थान दुर्गों का भी महत्वपूर्ण स्थान है| राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्गो में चित्तौड़गढ़, रणथंबोर, मेहरानगढ़, भटनेर, सिवाणा आदि दुर्ग ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत प्रसिद्ध रहे हैं| यहाँ के शूरवीरो तथा वीरांगनाओ ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने रक्त का एक-एक बूंद से यहाँ की मिट्टी को सींचा है | जिस कारण राजस्थान के पितामह कर्नल जेम्स टॉड ने कहा है कि-

" राजस्थान में कोई छोटा सा राज्य भी ऐसा नहीं है जिसमें थर्मोपल्ली जैसी रणभूमि ना हो और शायद ही ऐसा नगर मिले जहाँ एक से बढ़कर एक वीर पुरुष उत्पन्न ना हो |"

राजस्थान के वीर और वीरागंनाओं ने जहाँ रणक्षेत्र में तलवारों का जौहर दिखाकर विश्व इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया है वही भक्ति और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में भी राजस्थान पीछे नहीं रहा | यहाँ मीरा और दादू भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत रहे हैं यहाँ की सांस्कृतिक परंपरा अपनी श्रेष्ठता, शोर्यता तथा बलिदानी भावना के कारण देश के इतिहास में अमिट अक्षरों में लिखी हुई है |

राजस्थानी संस्कृति का स्वरूप-

राजस्थान में भौगोलिक दृष्टि से जहाँ एक ओर दूर-दूर तक फैली अरावली की श्रृंखलाएँ हैं वहीं दूसरी ओर विशाल मरुस्थल दिखाई देते हैं| जहाँ एक ओर पूर्व और दक्षिण में हरियाली का वैभव है वहीं दूसरी और पश्चिम में बालू रेत के विस्तृत क्षेत्र है | यहाँ के लोगों का रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, बोली-भाषा कलात्मक वैभव में विभिन्नता के साथ इतनी समृद्ध है कि इस भू-भाग से जुड़ा हुआ व्यक्ति यहाँ की संस्कृति पर गर्व महसूस करता है |

मूर्धन्य कवि कन्हैया लाल सेठिया ने लिखा है- “आ तो सुरगां न सरमावै, इण पर देव रमण न आवै, धरती धोरां री ----|” अर्थात् राजस्थान की रेतीली धरती तो स्वर्ग को भी लज्जित करती है और देवता भी यहाँ विचरण करने के लिए आते हैं| राजस्थान के सांस्कृतिक विरासत का स्वरूप, राजस्थान का साहित्य, राजस्थान की कल, राजस्थान के लोक नृत्य, तथा शास्त्रीय संगीत, देशभूषा, यहाँ की बोलियाँ तथा राजस्थान के लोक देवता व लोक देवियाँ है|

राजस्थान का साहित्य -प्राचीन काल से ही प्रदेश साहित्यकारों की कर्मभूमि रहा है | भाषा के प्रारम्भिक साहित्य के क्षेत्र में जैन ग्रंथो और साहित्यकारों का बोलबाला रहा है | युद्ध काल के समय चारण साहित्य वीर रस से ओत-प्रोत रहा है| इस काल में लोक साहित्य बीसलदेव रासो, हंसावली, बसंत विलास आदि कृतिया महत्वपूर्ण रही है | संत कवियों के साथ-साथ पीपाजी, मीराबाई आदि संत कवियों ने अपने उपदेश, भजन राजस्थानी भाषा में किए हैं |

राजस्थान की कला- राजस्थान के जनजीवन में प्रारंभ से ही कलात्मक अभिव्यक्ति का विशिष्ट महत्व है, यहाँ की सांस्कृतिक परंपरा अत्यंत ही प्राचीन, समृद्ध और वैभवशाली रही है| संगीत, साहित्य, नृत्य, हस्तकला और ललित कला के उत्कृष्ट उदाहरण को अब तक सुरक्षित रखने के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है | राजस्थान के नरेश हिंदू धर्म के अनुयायी होने के बावजूद अन्य धर्मों का भी आदर करते थे जिसके फ्लस्वरूप राज्य में जैन, बौद्ध, इस्लाम, ईसाई संस्कृति का विकास हुआ | आज राजस्थान में सभी धर्मों का अनुसरण करने वाले अनेक लोग रहते हैं| जिनके रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज आदि ने राज्य की कला, संस्कृति एवं साहित्य को प्रभावित किया है|

चित्रकला की विभिन्न शैलियों को ऊँचाइयों तक पहुँचाने में राजपूत नरेशो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है| विभिन्न स्थानों पर बने सुंदर महल, किले,छतरियाँ,कीर्ति-स्तंभ, विजय स्तंभ तथा देलवाड़ा व रणकपुर के जैन मंदिर उत्कृष्ट स्थापत्य कला के अनूठे संगम है| आज की ग्रामीण अंचलों में लोक कला तथा जनजातीय लोककला देखने को मिलती है |

राजस्थान के लोक संगीत व वाद्य यंत्र – राजस्थान में लोक संगीत में केवल साहित्य की दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि ये संगीतात्मक प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं| यहाँ की "मांड" संगीत प्रणाली धीरे-धीरे शास्त्रीय संगीत का रूप धारण कर रही है| यहाँ संगीत में अनेक वाद्यो का उपयोग किया जाता है | ये वाद्ययन्त्र चार प्रकार के होते हैं-

- फूंक मार कर बजाने वाला वाद्य यंत्र – अलगोजा, पुंगी, शंख, तुरही,शहनाई, बाकी आदि
- चमड़े से निर्मित वाद्य यंत्र – नगाड़ा, चंग, ढप, ढोलक, मादल, डमरू आदि
- तत् वाद्य यंत्र- तंदूरा, जंत, इकतारा, दोतारा, चौतारा, रावणहत्था आदि
- धन वाद्य यंत्र – घंटी, तासली, थाली, झांझ, मजीरा, घुंघरू, झालर आदि

राजस्थान की समन्वयशील संस्कृति –

राजस्थान में सांस्कृतिक एकता के वाहक साधु संत और फकीर रहे हैं इन साधु संतों ने जहाँ एक ओर मानव मात्र में एकता स्थापित करके निर्गुण भक्ति की संत परंपरा को पोषित किया है,वहीं सगुन भक्ति को लेकर भी राजस्थान में उतना ही विकास हुआ है | मुगल काल में अकबर के समय हिंदू- मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया जिसमें राजस्थान की राजपूत संस्कृति का विशेष योगदान है| राजस्थान में भी किले, महल, छतरियाँ एवं स्थापत्य कला में मुगलकालीन सांस्कृतिक समन्वय स्थापित दिखाई देता है और राजस्थान की चित्रकला, मुगलकालीन चित्रकला से काफी अधिक समानता रखती है जिससे इसमें भेद कर पाना बहुत कठिन काम है| चाहे लोक संगीत हो, चाहे शिल्पकला | सभी में हिंदू-मुस्लिम लोगों ने मिलकर कार्य किया है इस प्रकार यह सारी सांस्कृतिक धरोहर समन्वय और आपसी भाईचारे की संस्कृति रही है |

राजस्थान में संरक्षण की आवश्यकता एवं उसके लिए किए गए सरकारी प्रयास –

राजस्थान प्रदेश का गौरवशाली अतीत एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है इसके किले, मंदिर, महल, हवेलियाँ स्थापत्य कला के बेजोड़ विरासत है, इन सब को सुरक्षित रखने का हमारा परम दायित्व है| भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51A में कहा गया है कि भारत के प्रत्येक नागरिक का मूल कर्तव्य है कि देश की समग्र संस्कृति की समृद्ध विरासत के महत्व को समझें और उसे संरक्षित करें |

इससे प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा जिससे प्रदेश की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और रोजगार के अवसरों का विकास होगा | इससे प्रदेश की नई पीढ़ी को समृद्ध विरासत का दर्शन होगा तथा विश्वपटल पर राजस्थान प्रदेश का नाम उभरेगा,यहाँ व्यापार में वृद्धि होगी | जिससे देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होगी | राज्य में प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी और यातायात के साधनों को बढ़ावा मिलेगा | इसलिए इन सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षण बहुत जरूरी है| राजस्थान में सांस्कृतिक विरासतों के में संरक्षण में साहित्य के क्षेत्र में हिंदी, राजस्थानी, सिंधी, ब्रज, संस्कृत आदि विषयों की अकादमियाँ स्थापित की गई है तथा प्राचीन पोथीखाना तथा पुस्तकालयों में विद्यमान हजारों पांडुलिपियों को सुरक्षित बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है | चित्रकला के क्षेत्र में राजस्थान ललित कला अकादमी, नाटक के क्षेत्र में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी एवं बड़े शहरों में रंगमंच स्थापित किए गए हैं | राजस्थान की लोक कलाओं के विकास को ध्यान में रखकर ही जयपुर में जवाहर कला केंद्र स्थापित किया गया है | वर्तमान में राजस्थान सरकार के द्वारा यहाँ की संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहुँचाने का व्यापक प्रयास किए गए हैं| लेकिन सरकार को इस क्षेत्र में ओर भी सजगता लाने की आवश्यकता है |

राजस्थान में सामंती संस्कृति का चेहरा-

राजस्थान की संस्कृति अधिकांश सामंती रही है इसी कारण राजस्थान छोटे-बड़े का भेदभाव, लैंगिक असमानता, जातिवाद आदि प्रबल रहा है | इसी सामंती व्यवस्था के कारण स्त्रियों में घूंघट प्रथा, विधवा विवाह ने होना, लड़कियों को पढ़ाया नहीं जाना तथा नारियों को पुरुषों के समान अधिकार न मिलना है| इस सामंती व्यवस्था के आज भी कुछ जिलों का लिंगानुपात तथा महिलाओं का शिक्षा अनुपात आज भी कम है| इसी सामंत व्यवस्था के कारण नौजवानों में कट्टरता तो बढी है साथ ही राजनीति व सामाजिक चेतना भी क्षीण हुई है| वर्तमान में सरकार के द्वारा बहुत सारे सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा पुनर्जागरण के क्षेत्र में काम किया गया है जिससे आज महिलाओं और दबे -कुचले लोगों को समान अधिकार प्राप्त हो रहे हैं और सरकार को अभी इस क्षेत्र में जन जागृति करने की ओर आवश्यकता है|

आधुनिक और पारंपरिक संस्कृति के बीच एक नया संकट –

आधुनिक और पारंपरिक संस्कृति कुछ मायनो में समान हो सकती है लेकिन कुछ महत्वपूर्ण मायनों में वे स्पष्ट रूप से एक दूसरे से भिन्न है| पारंपरिक संस्कृति में अपने बड़ों का ध्यान रखना, उनकी सेवा सुश्रुवा करना, संयुक्त परिवार का होना, वेशभूषा, रहन-सहन भी पारंपरिक होना तथा संस्कारो का यथावत बने रहना है जबकि आधुनिक संस्कृति पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होने के कारण एकल परिवार, संस्कार विहीन जीवन तथा भौतिकवाद की चकाचौंध को ही सर्वोपरि मानती है |

वर्तमान में राजस्थान में सांस्कृतिक विरासत को तो संजोया जा रहा है जो एक चारदीवारी अर्थात म्यूजियम तक सीमित हो रही है| लेकिन आज यहाँ के नागरिक आधुनिक संस्कृति से प्रवाहित होकर आधुनिक दिखावे की तरफ बढ़ रही है जिससे यह पीढ़ी अपने पारंपरिक विरासतों से दूर होती जा रही है| वर्तमान में जिस तरह आधुनिक संस्कृति को बोलबाला बढ़ रहा है यह कही हमारे पारंपरिक संस्कृति को ही ना निगल जाए | इसलिए हमें इस आधुनिक संस्कृति के साथ-साथ पारंपरिक संस्कृति को अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए| जिससे हम अपने मूल संस्कृति से जुड़े रहेंगे|

उपसँहार –

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध है यह अपने देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में अपनी अलौकिक सौंदर्य के लिए जानी जाती है| राजस्थान की मिट्टी को भी लोग चंदन की भांति अपने मस्तक को धारण करते हैं | क्योंकि यह मिट्टी आज भी बलिदानों की शौर्यगाथा व त्यागमयी ललनाओ के लिए जानी जाती है | इस भूमि की शौर्य कथा का वर्णन यहाँ के कवियों के साथ-साथ विदेशी कवियों /लेखकों ने भी किया है |

कर्नल जेम्स टॉड ने लिखा है कि “यहाँ का जर्रा-जर्रा और चप्पा -चप्पा रणस्थली है और बच्चा-बच्चा वीर है |”

यहाँ के संत संप्रदाय तथा लोक देवता ने अनेक अंधविश्वासों और कुरीतियों का पुरजोर विरोध किया | वर्तमान में सरकार के द्वारा यहाँ सांस्कृतिक विरासत संवारने और संरक्षण के लिए कटिबंध है| अतः हम सभी राजस्थानीवासियो को चाहिए कि अपनी संस्कृति का संरक्षण व संवर्धन करें|